सम्यक्त्व के पच्चीस दोष तथा आठ गुण

Created By:-

श्रीमती सारिका विकास छाबड़ा

www.JainKosh.org

fppt.com

वसु मद टारि निवारि त्रिशठता, षट् अनायतन त्यागो ।
शंकादिक वसु दोष बिना, संवेगादिक चित पागो ॥
अष्ट अंग अरु दोष पचीसों, तिन संक्षेपै कहिये।
बिन जानें तैं दोष गुननकों, कैसे तजिये गहिये ॥११॥

- वसु= आठ
- टारि= त्याग करके,
- निवारि= हटाकर
- त्रिशठता= तीन प्रकार की मूढ़ता को
- षट्= छह
- संवेगादिक= संवेग, अनुकम्पा, आस्तिक्य और प्रशम में
- चित= मन को
- पागो= लगाना चाहिए

www.JainKosh.org

fppt.com

अष्ट अंग अरु दोष पचीसों, तिन संक्षेपै कहिये।
बिन जानें तैं दोष गुननकों, कैसे तजिये गहिये॥११॥

- अष्ट= आठ
- अरु= और
- संक्षेपै= संक्षेप में
- कहिये= कहा जाता है
- बिन जानें तैं= उन्हें जाने बिना
- तजिये= छोड़ें और
- गुननकों= गुणों को
- गहिये= ग्रहण करें

www.JainKosh.org

fppt.com

वसु मद टारि निवारि त्रिशठता, षट् अनायतन त्यागो।
शंकादिक वसु दोष बिना, संवेगादिक चित पागो ॥

८ मद, ३ मूढ़ता, ६ अनायतन और ८ शंकादि दोष इसप्रकार सम्यक्त के २५ दोष हैं ।

सम्यक्त के अभिलाषी जीव को सम्यक्त के इन २५ दोषों का त्याग करके संवेगादि भावनाओं में मन लगाना चाहिए ।

www.JainKosh.org

fppt.com

अष्ट अंग अरु दोष पचीसों, तिन संक्षेपै कहिये।
बिन जानें तैं दोष गुननकों, कैसे तजिये गहिये॥११॥

अब सम्यक्त्व के ८ अंगों और २५ दोषों का संक्षेप में वर्णन किया जाता है;

क्योंकि जाने और समझे बिना दोषों को कैसे छोड़ा जा सकता है तथा गुणों को कैसे ग्रहण किया जा सकता है?

www.JainKosh.org

fppt.com

सम्यक्त्व आठ अंग और शंकादि आठ दोषों का लक्षण

www.JainKosh.org

fppt.com

जिन वच में शंका न धार वृष, भव-सुख-वांछा भानै।
मुनि-तन मलिन न देख घिनावै, तत्त्व-कुतत्त्व पिछानै॥
निज गुण अरु पर औगुण ढाँके, वा निजधर्म बढ़ावै।
कामादिक कर वृषतैं चिगते, निज-पर को सु दिढ़ावै॥१२॥

- जिन वच में= सर्वज्ञदेव के कहे हुए तत्त्वों में
- न धार= धारण नहीं करना
- वृष= धर्म को
- भव-सुख-वांछा=सांसारिक सुखों की इच्छा
- भानै= न करे
- मुनि-तन= मुनियों के शरीरादि
- मलिन= मैले
- न घिनावै= घृणा न करना
- तत्त्व-कुतत्त्व=सच्चे और झूठे तत्त्वों की
- पिछानै= पहिचान रखे

www.JainKosh.org

fppt.com

निज गुण अरु पर औगुण ढाँके, वा निजधर्म बढ़ावै।
कामादिक कर वृषतैं चिगते, निज-पर को सु दिढ़ावै॥१२॥

- निजगुण= अपने गुणों को
- अरु= और
- पर औगुण= दूसरे के अवगुणों को
- ढाँके= छिपाये
- वा= तथा
- धर्मी सों= अपने साधर्मीजनों से
- गौ-वच्छ-प्रीति-सम= बछड़े पर गाय की प्रीति के समान
- कामादिक कर=काम-विकारादि के कारण
- कर= प्रेम रखना
- वृषतैं= धर्म से
- चिगते= च्युत होते हुए
- निज-पर को= अपने को तथा पर को
- सु दिढ़ावै= उसमें पुनः दृढ़ करे

www.JainKosh.org
fppt.com

धर्मी सों गौ-वच्छ-प्रीति सम, कर जिनधर्म दिपावै;
इन गुणतैं विपरीत दोष वसु, तिनकों सतत खिपावै ।

- जिनधर्म= जैनधर्म की
- दिपावै= शोभा में वृद्धि करना
- इन गुणतैं= इन [आठ] गुणों से
- वसु= आठ
- तिनको= उन्हें
- सतत= हमेशा
- खिपावै= दूर करना चाहिए

www.JainKosh.org
fppt.com

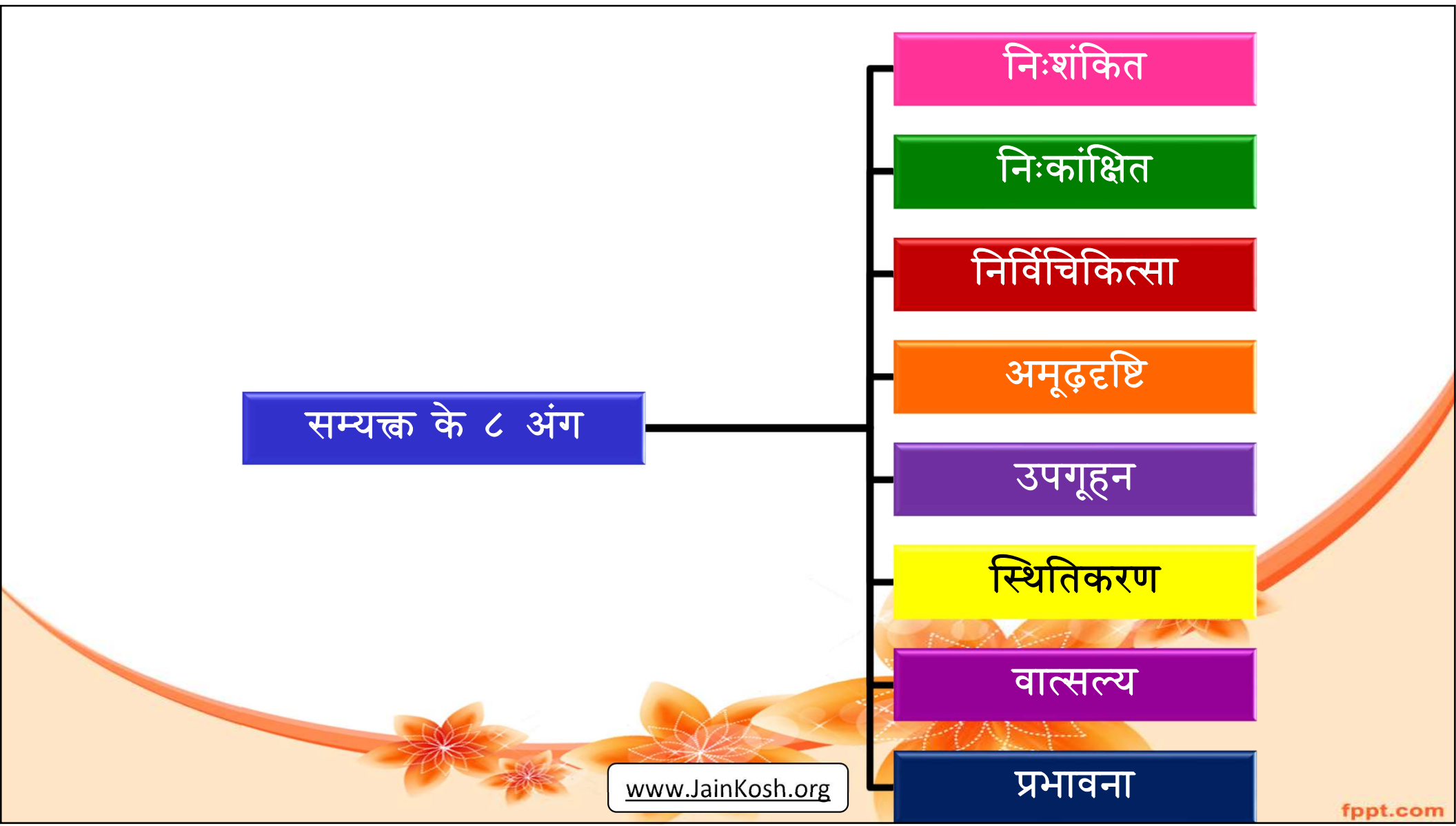
सम्यक्त्व के ८ अंग
निःशंकित
निःकांक्षित
निर्विचिकित्सा
अमूढ़दृष्टि
उपगूहन
स्थितिकरण
वात्सल्य
प्रभावना
www.JainKosh.org
fppt.com

1. तत्त्व यही है,
2. ऐसा ही है,
3. अन्य नहीं है तथा
4. अन्य प्रकार से नहीं है

- इसप्रकार यथार्थ तत्त्वों में अचल श्रद्धा होना, सो निःशंकित अंग कहलाता है ।

जिन वच में शंका न धार

www.JainKosh.org

fppt.com

नि:शंकित अंग
६ द्रव्य
७ तत्त्व
९ पदार्थ
जिनेन्द्र देव
तीर्थंकर प्रणीत आगम
निर्ग्रन्थ गुरु
में शंका न होना
www.JainKosh.org
fppt.com

यह कैसे संभव है?

रागादि दोष तथा अज्ञान के कारण से

असत्य बोला जाता है

जो कि सर्वज्ञ में नहीं है

अत: उनके द्वारा कथित

तत्त्वादि में शंका नहीं होती है

www.JainKosh.org

fppt.com

७ भयों से रहित होना नि:शंकित है

www.JainKosh.org

fppt.com

७ भय

- इहलोक भय
- परलोक भय
- मरण भय
- वेदना भय
- अनरक्षा भय
- अगुप्ति भय
- अकस्मात भय

www.JainKosh.org

fppt.com

निःशंकित अंग में प्रसिद्ध

अंजन चोर

www.JainKosh.org

fppt.com

निःकांक्षित अंग

धर्म सेवन करके उसके बदले में
सांसारिक सुखों की इच्छा न
करना निःकांक्षित अंग कहलाता है

वृष भव-सुख-वांछा भानै।

www.JainKosh.org

fppt.com

कांक्षा ३ प्रकार की होती है

इहलोक संबंधी

इस लोक में धर्म से धन, संपदा आदि प्राप्त होंवे

परलोक संबंधी

परलोक में भोग, देवपदादि प्राप्त होंवे

कुधर्म संबंधी

तापसी आदि का धर्म सर्व जनों से पूज्य होने से मैं भी धारण कर लूँ

www.JainKosh.org

fppt.com

कांक्षा क्यों नहीं करना चाहिये?

यदि कांक्षा के बिना भी
सब कुछ मिल सकता है
तो कांक्षा क्यों करना?

कांक्षावान मनुष्य
सभी के द्वारा निंदित
होता है

www.JainKosh.org

fppt.com

सम्यग्दृष्टि की भावना

चक्रवर्ती की संपदा, इन्द्र सरीखे भोग।
काकवीट सम गिनत हैं सम्यग्दृष्टि लोग॥

www.JainKosh.org

fppt.com

निःकांक्षित अंग में प्रसिद्ध

अनन्तमती

www.JainKosh.org

fppt.com

निर्विचिकित्सा अंग

मुनिराज अथवा अन्य किसी धर्मात्मा के शरीर को मैला देखकर घृणा न करना, उसे निर्विचिकित्सा अंग कहते हैं ।

मुनि-तन मलिन न देख घिनावे

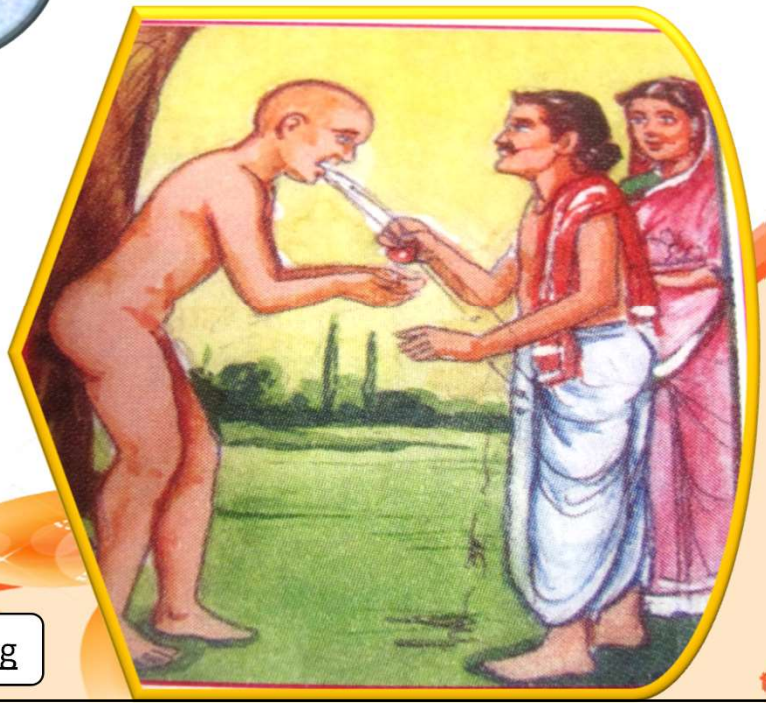

www.JainKosh.org

fppt.com

विचिकित्सा २ प्रकार की होती है
द्रव्य विचिकित्सा
भाव विचिकित्सा
www.JainKosh.org
fppt.com

द्रव्य विचिकित्सा

साधु आदि के बाह्य मल को देखकर ग्लानि करना, वैय्यावृत्ति आदि नहीं करना

www.JainKosh.org

fppt.com

द्रव्य विचिकित्सा

मलीन क्षेत्र, गाँवादि

वर्षा, गर्मी आदि,

मलमूत्र, रूधिर, मांस, रोग, दुर्गन्धतादि

देख कर - सुन कर

ग्लानि करना

www.JainKosh.org

fppt.com

भाव विचिकित्सा

जिनधर्म के प्रति
अशुभ भावनाओं से
चित्त में मलिनता होना

www.JainKosh.org

fppt.com

भाव विचिकित्सा

जिनप्रवचन घोर कष्टदायक है

अन्य सब क्रिया समीचीन है, पर साधु का स्नानादि नहीं करना निन्दनीय है

भूख-प्यास, नग्नता, केंशलोंच आदि से दुख होता है

www.JainKosh.org

fppt.com

निर्विचिकित्सा अंग में प्रसिद्ध

उद्दायन
राजा

www.JainKosh.org

fppt.com

अमूढ़दृष्टि अंग

सच्चे और झूठे तत्त्वों की परीक्षा करके मूढ़ताओं तथा अनायतनों में न फँसना अमूढ़दृष्टि अंग है ।

तत्त्व-कुतत्त्व पिछानै

www.JainKosh.org

fppt.com

अमूढ़दृष्टि

मिथ्यामार्ग, उस पर चलने वालों की मन, वचन, काय से अनुमोदना नहीं करना अमूढ़दृष्टि है

www.JainKosh.org

fppt.com

अमूढ़दृष्टि अंग में प्रसिद्ध

रेवती रानी

www.JainKosh.org

fppt.com

उपगूहन अंग

निज गुण अरु पर औगुण ढाँके, वा निजधर्म बढ़ावे।

1. अपने गुणों को लोक में प्रकाशित नहीं करना
2. दूसरों के दोषों को ढँकना और
3. आत्मधर्म को बढ़ाना

www.JainKosh.org

fppt.com

उपगूहन का दूसरा नाम उपवृंहण भी है

अर्थात् अपने आत्म गुणों को, तत्त्वश्रद्धान को बढ़ाना

www.JainKosh.org

fppt.com

उपगूहन अंग में प्रसिद्ध

जिनदत्त सेठ

www.JainKosh.org

fppt.com

कामादिक कर वृषतैं चिगते,
निज-पर को सु दिढ़ावै

काम, क्रोध, लोभ आदि किसी भी कारण से

सम्यक्त और चारित्र से भ्रष्ट हुए

अपने को तथा

पर को

धर्म में स्थिर करना स्थितिकरण अंग है।

www.JainKosh.org

fppt.com

कषायोदय से

वेदना से

दरिद्रता से

धर्म छूटता हो तो

उपदेश से,

पथ्यादि द्वारा,

भोजन, औषधि, धनादि द्वारा

स्थित करना चाहिये

www.JainKosh.org

fppt.com

स्थितिकरण अंग में प्रसिद्ध

वारिषेण मुनि

www.JainKosh.org

fppt.com

धर्मी सों गौ-वच्छ-प्रीति सम कर

अपने साधर्मी जन पर बछड़े से प्यार रखनेवाली गाय की भाँति निरपेक्ष प्रेम रखना, सो वात्सल्य अंग है

वात्सल्य अंग

www.JainKosh.org

वात्सल्यता

रत्नत्रय के धारक मुनि,
आर्यिका, श्रावक, श्राविका तथा
अव्रत सम्यगदृष्टी के लिये

आदर, उत्साह, वन्दना,
स्तवन, विनय, वैयावृत्ति ,
आनन्द का भाव होना

www.JainKosh.org

fppt.com

वात्सल्य अंग में प्रसिद्ध

www.JainKosh.org

fppt.com

अज्ञान-अन्धकार को दूर कर विद्या-बल-बुद्धि आदि के द्वारा शास्त्र में कही हुई योग्य रीति से अपने सामर्थ्यानुसार जैनधर्म का प्रभाव प्रकट करना, वह प्रभावना अंग है ।

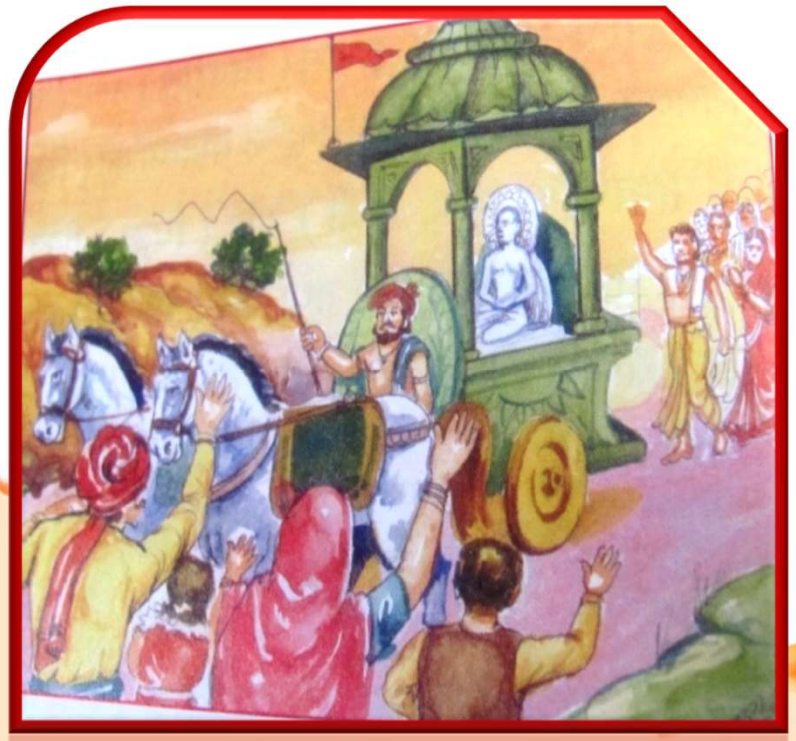

जिनधर्म दिपावे

www.JainKosh.org

fppt.com

प्रभावना कैसे करना?

सम्यक् दर्शन,
ज्ञान, चारित्र से
आत्मा का प्रभाव
प्रगट करना

www.JainKosh.org

fppt.com

प्रभावना कैसे करना?

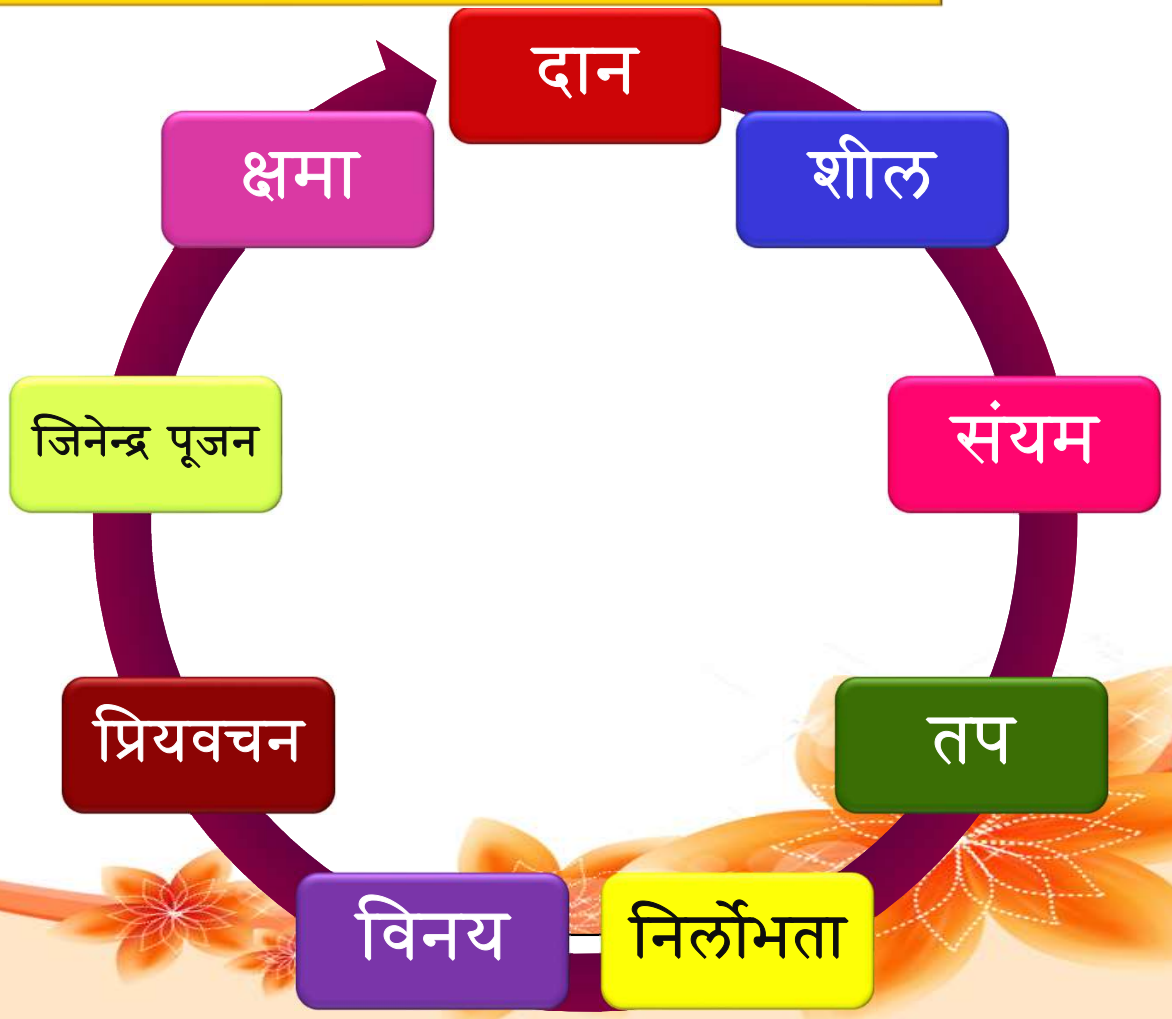

fppt.com

प्रभावना कौन कर सकता है?

जो स्वयं धर्म से
प्रभावित हो

www.JainKosh.org

fppt.com

प्रभावना अंग में प्रसिद्ध

मुनि वज्रकुमार

www.JainKosh.org

fppt.com

8 अंगों के उदाहरण

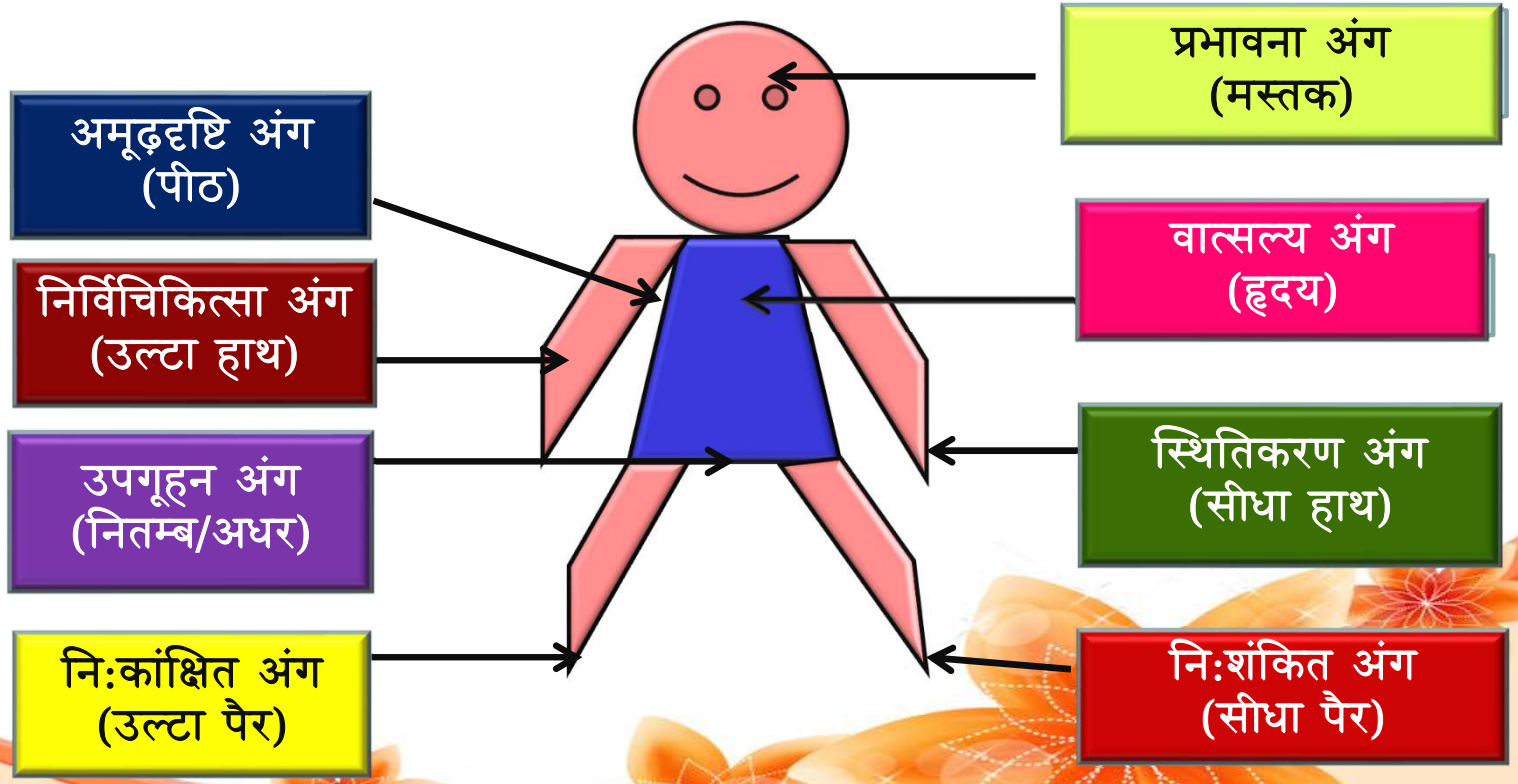

www.JainKosh.org

fppt.com

मद नामक दोष के आठ प्रकार

www.JainKosh.org

fppt.com

पिता भूप वा मातुल नृप जो, होय न तौ मद ठानै ।
मद न रूपकौ मद न ज्ञानकौ, धन बलकौ मद भानै॥१३॥

- पिता= पिता आदि पितृपक्ष के स्वजन
- भूप= राजादि
- जो= यदि
- मद= अभिमान
- मातुल= मामा आदि मातृपक्ष के स्वजन
- न ठानै= नहीं करता,
- ज्ञानकौ= विद्या का
- मद न= अभिमान नहीं करता;
- समकितकौ=सम्यग्दर्शन को
- मल= दूषित
- नृप= राजादि

www.JainKosh.org
fppt.com

तपको मद न मद जु प्रभुताको, करै न सो निज जानै।
मद धारै तौ यही दोष वसु समकितको मल ठानै ॥

* धनको= लक्ष्मी का
* मद भानै= अभिमान नहीं करता;
* जु= और
* प्रभुता को= ऐश्वर्य, बड़प्पन का
* मद न करै= अभिमान नहीं करता
* सो= वह
* निज= अपने आत्मा को
* जानै= जानता है । [यदि जीव उनका]
* मद= अभिमान
* धारै= रखता है तो
* यही= ऊपर कहे हुए मद
* दोष= दोषरूप होकर
* वसु= आठ

www.JainKosh.org

fppt.com

पिता भूप वा मातुल नृप जो, होय न तौ मद ठानै ।
मद न रूपकौ मद न ज्ञानकौ, धन बलकौ मद भानै॥१३॥

सम्यग्दृष्टि जीव पितापक्ष या मामा पक्ष के राजादि होने पर अभिमान नहीं करता

शारीरिक सौंदर्य का, ज्ञान का अभिमान नहीं करता

लक्ष्मी का, शक्ति का अभिमान नहीं करता

www.JainKosh.org

fppt.com

तपकौ मद न मद जु प्रभुताकौ, करै न सो निज जानै।
मद धारै तौ यही दोष वसु समकितकौ मल ठानै ॥

सम्यग्दृष्टि जीव तप का, ऐश्वर्य का, अभिमान नहीं करता

वह अपने आत्मा को जानता है

यदि जीव उनका अभिमान रखता है तो यही ८ मद दोष रुप होकर सम्यग्दर्शन को दूषित करते हैं

www.JainKosh.org

fppt.com

मद

अहंकार करना

दूसरे के उत्थान को नहीं देख सकना

ईर्ष्या- डाह करना

दूसरों को नीचा दिखाना

www.JainKosh.org

fppt.com

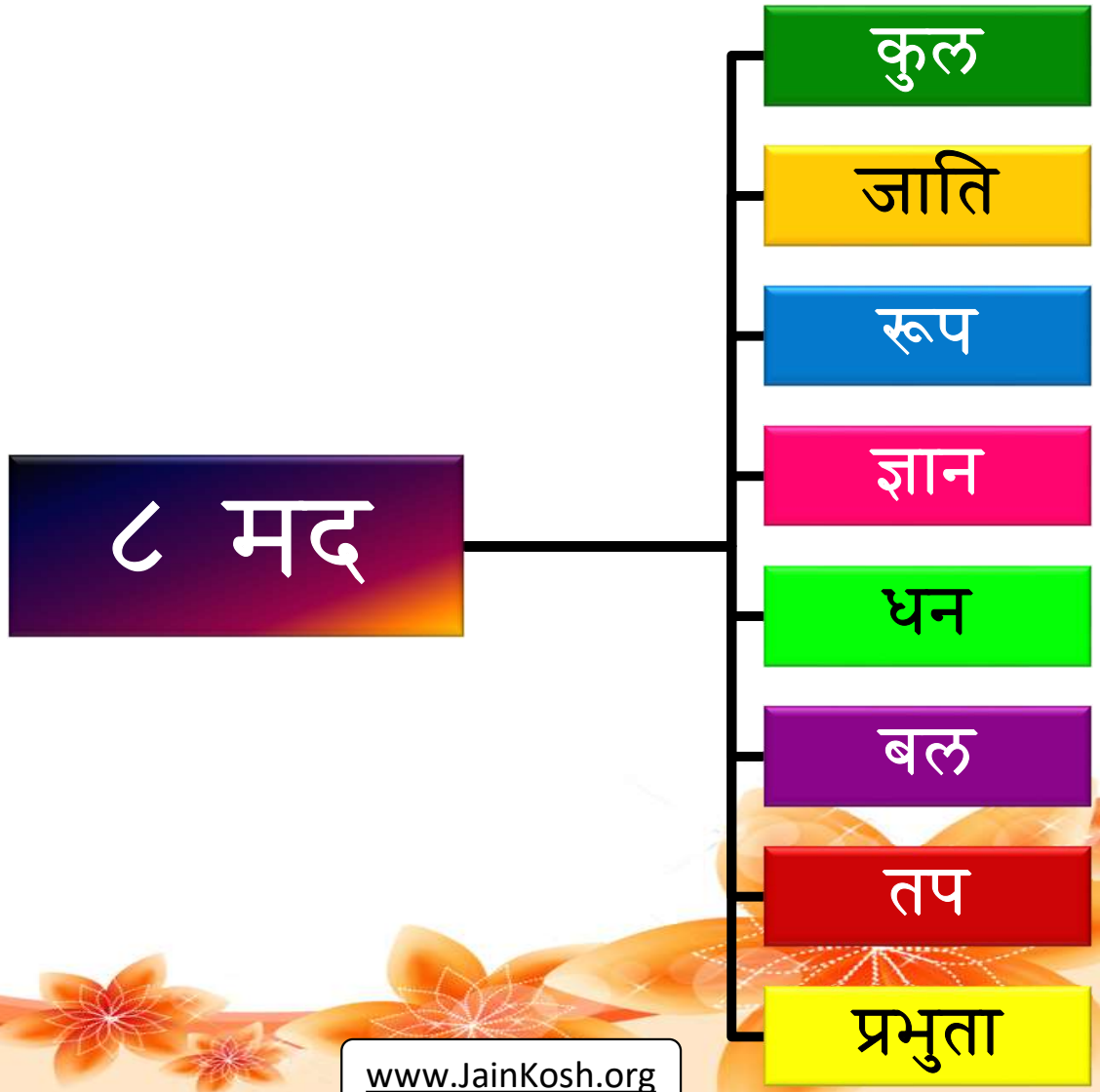

www.JainKosh.org

fppt.com

कुल

- पिता के गोत्र को

जाति

- माता के गोत्र को जाति

पिता आदि पितृपक्ष में राजादि प्रतापी पुरुष होने से अभिमान करना, सो कुल-मद है

www.JainKosh.org

fppt.com

मामा आदि मातृपक्ष में राजादि प्रतापी पुरुष होने का अभिमान करना, सो जाति-मद है

www.JainKosh.org

fppt.com

शारीरिक सौन्दर्य का मद करना, सो रूप-मद है ।

www.JainKosh.org

fppt.com

अपनी विद्या का अभिमान करना, सो ज्ञान-मद है ।

www.JainKosh.org

fppt.com

अपनी धन-सम्पत्ति का अभिमान करना, सो धन-मद है ।

www.JainKosh.org

fppt.com

अपनी शारीरिक शक्ति का गर्व करना, सो बल-मद है

www.JainKosh.org

fppt.com

अपने व्रत-उपवासादि तप का गर्व करना, सो तप-मद है

www.JainKosh.org

fppt.com

अपने बड़प्पन और आज्ञा का गर्व करना प्रभुता-मद है ।

www.JainKosh.org

fppt.com

जो जीव इन आठ का गर्व नहीं करता,
वह आत्मा का ज्ञान कर सकता है ।
यदि उनका गर्व करता है तो ये मद
सम्यग्दर्शन को दूषित करते हैं ।

www.JainKosh.org

fppt.com

छह अनायतन तथा तीन मूढ़ता दोष

www.JainKosh.org

fppt.com

कुगुरु-कुदेव-कुवृष सेवक की नहिं प्रशंस उचरै है ।
जिनमुनि जिनश्रुत विन कुगुरादिक, तिन्हैं न नमन करै है॥१४॥

- कुवृष सेवक की= कुधर्म की तथा उनके सेवक की
- नहिं उचरै है= नहीं करता
- जिनश्रुत= जिनवाणी
- विन= के अतिरिक्त
- कुगुरादि= कुगुरु, कुदेव, कुधर्म हैं
- तिन्हें= उन्हें
- नमन= नमस्कार
- न करै है= नहीं करता ।

www.JainKosh.org
fppt.com

कुगुरु-कुदेव-कुवृष सेवक की नहिं प्रशंस उचरै है ।
जिन मुनि जिनश्रुत विन कुगुरादिक, तिन्हैं न नमन करै है॥१४॥

कुगुरु, कुदेव, कुधर्म; कुगुरु सेवक, कुदेव सेवक तथा कुधर्म सेवक ये छह अनायतन दोष कहलाते हैं ।

सम्यग्दृष्टि जीव उनकी भक्ति, प्रशंसा, विनय और पूजनादि नहीं करता;

जिनेन्द्र देव, वीतरागी मुनि और जिनवाणी को छोड़कर जो कुदेव, कुगुरु तथा कुशास्त्र हैं उन्हें नमस्कार नहीं करता है।

www.JainKosh.org

fppt.com

अनायतन

धर्म के अस्थान

www.JainKosh.org

fppt.com

fppt.com

मिथ्यात्व के नोकर्म

1. • कुदेव
2. • कुदेव का मन्दिर
3. • कुशास्त्र
4. • कुशास्त्र को धारण करने वाले
5. • खोटी तपस्या
6. • खोटी तपस्या करने वाले

www.JainKosh.org

fppt.com

मूढ़ता

मूर्खता =
बिना विचारे
कार्य करना

www.JainKosh.org

fppt.com

तीन मूढ़ता

देव

गुरु

लोक

www.JainKosh.org

fppt.com

देव मूढ़ता

वर की इच्छा से रागी-द्वेषी देवताओं का सेवन करना

जैसे- कुलदेवी, लक्ष्मी देवी, शीतलामाता, क्षेत्रपाल, पद्मावती को पूजना

www.JainKosh.org

fppt.com

गुरु मूढ़ता

जो परिग्रह, आरम्भ और हिंसादि रुप संसार चक्र में फँसे हुये हैं

उनके वचन में आदर कर प्रवर्तन करना, धर्म कार्य में प्रधान मानना

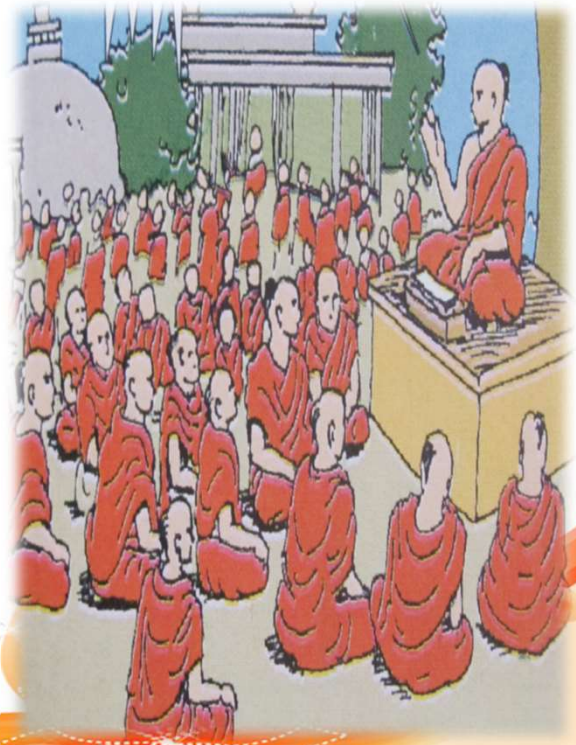

www.JainKosh.org

fppt.com

कुगुरु कैसे?

जो कुल के द्वारा अपने को गुरु माने

पट्ट परंपरा से अपने को गुरु माने

मात्र ब्रह्मचारी होने पर अपने को गुरु माने

किसी प्रकार का भेष धारण करने पर अपने को गुरु माने

www.JainKosh.org

fppt.com

लोकमूढ़ता

घर, भोजन, अग्नि, पृथ्वी, सुवर्ण, रत्न तथा अस्त्र आदि जो-जो पदार्थ मनुष्यों का उपकार करने वाले हैं उनमें वन्दना करने का भाव होना

www.JainKosh.org

fppt.com

लोकमूढ़ता

- काल में स्नान करना
- जल में प्रवेश करके मरना
- अग्नि में जल कर मरना
- गाय की पूँछ आदि को ग्रहण करने मरना
- पृथ्वी, आग्नि, वटवृक्ष की पूजा करना
- ये सब पुण्य के कारण हैं
- ऐसा मानना

fppt.com

किन कारणों से इन्हें नमस्कार किया जाता है?

www.JainKosh.org

fppt.com

सम्यक्त्व के गुण

fppt.com

संवेग

- धर्म, धर्मात्मा पुरुष, धर्म के फल में अनुराग होना

निर्वेद

- संसार, देह, और दुर्गति में ले जाने वाले भोगों से विरक्तिपना

fppt.com

आत्मनिन्दा

- स्व के प्रमाद, असंयम, राग द्वेष हो जाने पर मन में अपनी निन्दा करना

गर्हा

- पंचाचार परायण गुरु के निकट विनय सहित अपने निंद्य दोष प्रगट करना

www.JainKosh.org

fppt.com

उपशम	क्रोध, मानादि कषायों की मन्दता, शान्तता का होना
भक्ति	५ परमेष्ठी, जिनवाणी, जिनेन्द्र के प्रतिबिम्ब, धर्म, धर्म के धारक धर्मात्माओं में, उनके गुणों में अनुराग होना

www.JainKosh.org

fppt.com

अनुकम्पा

- ४ प्रकार के संघ के प्रति प्रीति होना

वात्सल्य

- ६ काय के जीवों के प्रति दया का होना
- दूसरों के दुख देखकर अपने परिणामों का कंपायमान होना, उनके दुख मिटाने का परिणाम होना

www.JainKosh.org

fppt.com

अव्रती सम्यग्दृष्टि की देवों द्वारा पूजा और गृहस्थपने में अप्रीति

www.JainKosh.org

fppt.com

दोषरहित गुणसहित सुधी जे, सम्यग्दरश सजै हैं ।
चरितमोह वश लेश न संजम, पै सुरनाथ जजै हैं ॥
गेही, पै गृह में न रचैं ज्यों, जलतैं भिन्न कमल है ।
नगर नारिको प्यार यथा, कादे में हेम अमल है ॥१५॥

- सुधी= बुद्धिमान पुरुष
- सजै हैं=भूषित हैं
- चरितमोहवश=अप्रत्याख्यानावरणीय चारित्रमोहनीय कर्म के उदयवश
- लेश= किंचित् भी
- संजम= संयम
- पै= तथापि
- सुरनाथ= देवों के स्वामी इन्द्र
- जजै हैं= पूजा करते हैं

www.JainKosh.org

fppt.com

गेही, पै गृह में न रचैं ज्यों, जलतैं भिन्न कमल है ।
नगर नारिको प्यार यथा, कादे में हेम अमल है ॥१५॥

- गेही= गृहस्थ हैं
- पै= तथापि
- गृह में= घर में
- न रचैं= नहीं राचते ।
- ज्यों= जिसप्रकार
- जलतैं= जल से
- यथा= जिसप्रकार
- कादे में= कीचड़ में
- हेम= सुवर्ण
- अमल है= शुद्ध रहता है
- नगर नारिको= वेश्या के
- प्यार यथा= प्रेम की भाँति

www.JainKosh.org

fppt.com

दोषरहित गुणसहित सुधी जे, सम्यग्दरश सजै हैं ।
चरितमोह वश लेश न संजम, पै सुरनाथ जजै हैं ॥

जो विवेकी पच्चीस दोष रहित तथा आठ अंग सहित सम्यग्दर्शन धारण करते हैं,

उन्हें अप्रत्याख्यानावरणीय कषाय के तीव्र उदय से युक्त होने के कारण,

यद्यपि संयमभाव लेशमात्र नहीं होता;

तथापि इन्द्रादि उनकी पूजा करते हैं ।

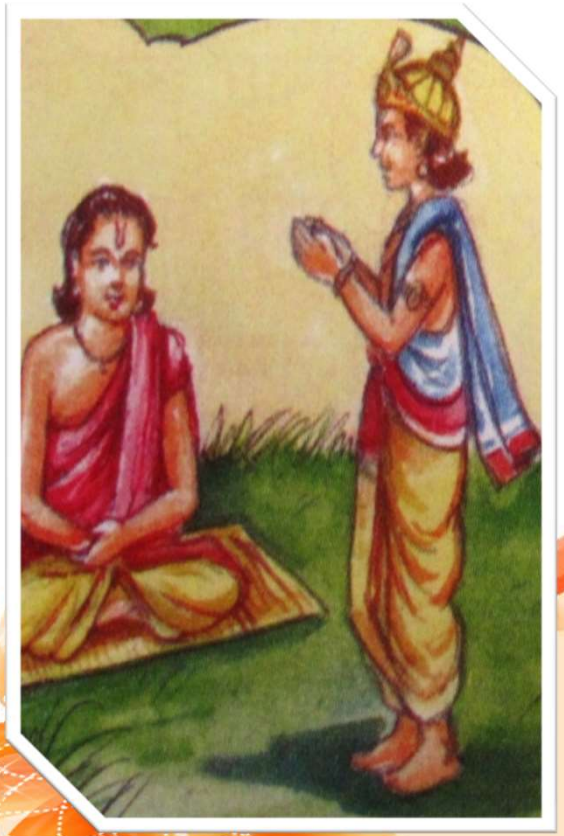

www.JainKosh.org

fppt.com

गेही, पै गृह में न रचैं ज्यों, जलतैं भिन्न कमल है ।

जिसप्रकार पानी में रहने पर भी कमल पानी से अलिप्त रहता है,

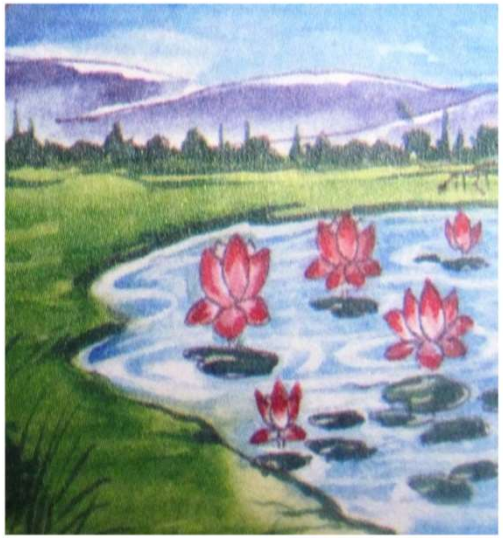

उसीप्रकार सम्यग्दृष्टि घर में रहते हुए भी गृहस्थदशा में लिप्त नहीं होता, उदासीन रहता है ।

fppt.com

नगर नारिको प्यार यथा,

जिसप्रकार वेश्या का प्रेम मात्र पैसे से ही होता है, मनुष्य पर नहीं होता;

उसीप्रकार सम्यग्दृष्टि का प्रेम सम्यक्त में ही होता है, किन्तु गृहस्थपने में नहीं होता ।

www.JainKosh.org

ppt.com

कादे में हेम अमल है ॥१५॥

*जिसप्रकार सोना कीचड़ में पड़े रहने पर भी निर्मल रहता है, उसीप्रकार सम्यग्दृष्टि जीव गृहस्थदशा में रहने पर भी उसमें लिप्त नहीं होता; क्योंकि वह उसे त्याज्य मानता है ।

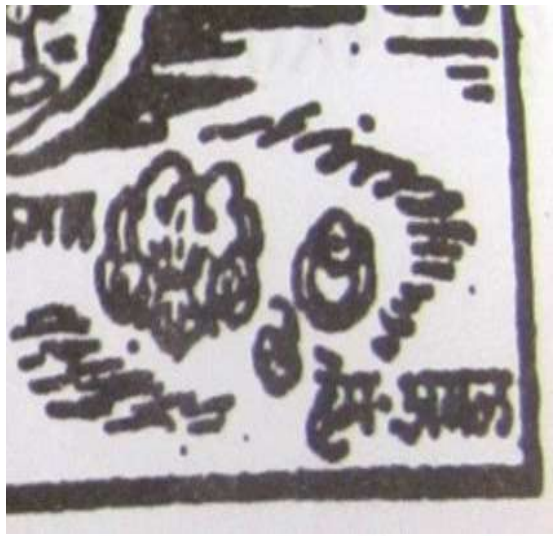

www.JainKosh.org

fppt.com

सम्यक्त्व की महिमा, सम्यग्दृष्टि के अनुत्पत्ति स्थान तथा सर्वोत्तम सुख और सर्व धर्म का मूल

www.JainKosh.org

fppt.com

प्रथम नरक विन षट् भू ज्योतिष वान भवन षंड नारी ।
थावर विकलत्रय पशु में नहिं, उपजत सम्यक् धारी ॥
तीनलोक तिहुँकाल माहिं नहिं, दर्शन सो सुखकारी ।
सकल धर्म को मूल यही, इस विन करनी दुखकारी ॥१६ ॥

- प्रथम नरक विन=पहले नरक के अतिरिक्त
- षट् भू= शेष छह नरकों में
- वान= व्यंतर देवों में,
- भवन= भवनवासी देवों में
- षंड= नपुंसकों में,
- थावर= पाँच स्थावरों में,
- विकलत्रय=द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीवों में तथा
- पशु में= कर्मभूमि के पशुओं में
- नहिं उपजत= उत्पन्न नहीं होते ।

www.JainKosh.org

fppt.com

सम्यग्दृष्टि के अनुत्पत्ति स्थान

दूसरे से सातवें नरक के नारकी

ज्योतिषी

व्यन्तर

भवनवासी

नपुंसक

स्त्री

एकेन्द्रिय, विकलत्रय

कर्मभूमि के पशु नहीं होते

नीच कुल वाले

विकृत अंगवाले

अल्पायुवाले

दरिद्री नहीं होते

www.JainKosh.org

fppt.com

सम्यग्दृष्टि कहाँ उत्पन्न होते हैं?

www.Jai .org
fppt.com

तीनलोक तिहुँकाल माहिं नहिं, दर्शन सो सुखकारी ।
सकल धर्म को मूल यही, इस विन करनी दुखकारी ॥१६ ॥

तीनलोक और तीनकाल में सम्यग्दर्शन के समान सुखदायक अन्य कोई वस्तु नहीं है ।

यह सम्यग्दर्शन ही सर्व धर्मों का मूल है ।

इसके अतिरिक्त जितने क्रियाकाण्ड हैं, वे दुःखदायक हैं

www.JainKosh.org

fppt.com

सम्यग्दर्शन के बिना ज्ञान और चारित्र का मिथ्यापना

www.JainKosh.org

fppt.com

मोक्षमहल की परथम सीढ़ी, या बिन ज्ञान चरित्रा।
सम्यकता न लहै, सो दर्शन, धारो भव्य पवित्रा॥
‘‘दौल’’ समझ सुन चेत सयाने, काल वृथा मत खोवै ।
यह नरभव फिर मिलन कठिन है,जो सम्यक् नहिं होवे॥१७॥

- परथम= प्रथम
- याबिन=इस सम्यग्दर्शन के बिना
- ज्ञानचरित्रा= ज्ञान और चारित्र
- सम्यकता= सच्चाई
- न लहै= प्राप्त नहीं करते; इसलिये
- सो= ऐसे
- दर्शन= सम्यग्दर्शन को
- धारो= धारण करो ।

www.JainKosh.org
fppt.com

''दौल'' समझ सुन चेत सयाने, काल वृथा मत खोवै ।
यह नरभव फिर मिलन कठिन है,जो सम्यक् नहिं होवे॥१७॥

- मिलन= मिलना
- कठिन है= दुर्लभ है ।
- सयाने 'दोल'= हे समझदार दौलतराम!
- समझ= समझ और
- चेत= सावधान हो,
- काल= समय को
- वृथा= व्यर्थ
- मत खोवै= न गँवा; [क्योंकि]
- जो= यदि
- सम्यक्= सम्यग्दर्शन
- नहिं होवै= नहीं हुआ तो
- यह= यह
- नर भव= मनुष्य पर्याय

www.JainKosh.org
fppt.com

मोक्षमहल की परथम सीढ़ी, या बिन ज्ञान चरित्रा।
सम्यकता न लहै, सो दर्शन, धारो भव्य पवित्रा॥

सम्यग्दर्शन ही मोक्षरूपी महल में पहुँचने की प्रथम सीढ़ी है ।

जब तक सम्यग्दर्शन न हो, तब तक ज्ञान वह मिथ्याज्ञान और चारित्र वह मिथ्याचारित्र कहलाता है,

इसलिये प्रत्येक आत्मार्थी को ऐसा पवित्र सम्यग्दर्शन अवश्य धारण करना चाहिए ।

www.JainKosh.org

fppt.com

सम्यक्त्व के अभाव में ज्ञान-चारित्र का अभाव

जैसे बीज के बिना वृक्ष की उत्पत्ति, स्थिति, वृद्धी और फल नहीं होता है

वैसे ही ज्ञान और चारित्र की उत्पत्ति, स्थिति, वृद्धी और फल सम्यग्दर्शन के बिना संभव नहीं है

fppt.com

''दौल'' समझ सुन चेत सयाने, काल वृथा मत खोवै ।
यह नरभव फिर मिलन कठिन है,जो सम्यक् नहिं होवे॥१७॥

प. दौलतरामजी अपने आत्मा को सम्बोध कर कहते हैं कि हे विवेकी आत्मा!

अपने अमूल्य जीवन को व्यर्थ न गँवा ।

इस जन्म में ही यदि सम्यक्त्व प्राप्त न किया तो फिर मनुष्यपर्याय आदि अच्छे योग पुनः पुनः प्राप्त नहीं होते

www.JainKosh.org

fppt.com

३ काल में ३ लोक में

सम्यक्त्व के समान अन्य कोई उपकारक नहीं है

मिथ्यात्व के समान अन्य कोई अपकारक नहीं है

www.JainKosh.org

fppt.com

इसीलिये मिथ्यात्व का त्याग
कर
एक क्षण भी व्यर्थ न गँवाकर
सम्यक्त्व प्राप्त करना चाहिये

www.JainKosh.org

fppt.com

- Reference :
  - तत्त्वार्थ मँजूषा,
  - जैनेन्द्रसिद्धान्त कोश
  - रत्नकरण्ड श्रावकाचारजी
  - श्री मोक्षमार्ग प्रकाशक जी
- Presentation created by : Smt. Sarika Vikas Chhabra
- For updates / comments / feedback / suggestions, please contact

  - sarikam.j@gmail.com
  - 94066-82889
  - https://www.Jainkosh.org

fppt.com